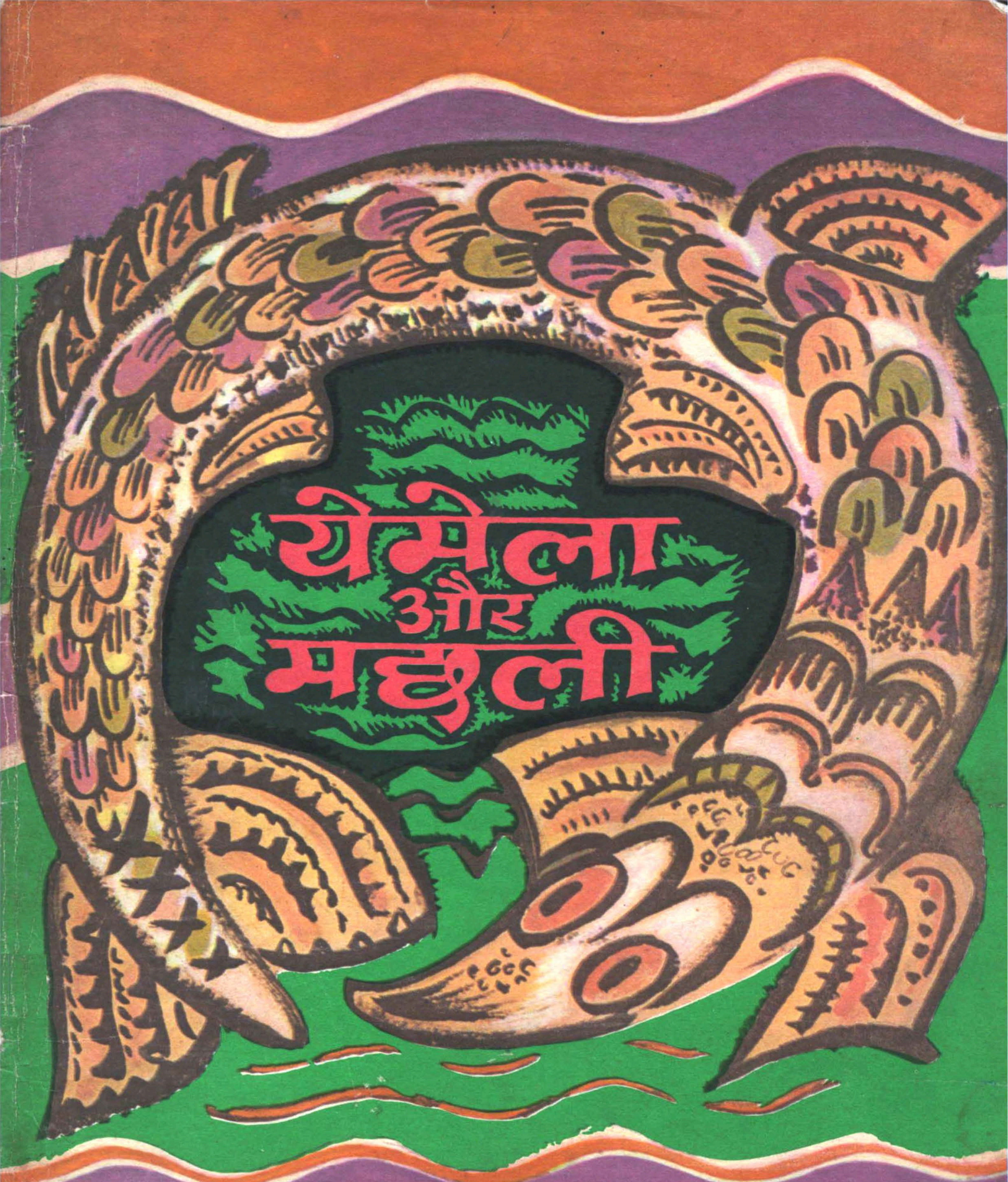

येमेला और मछली

रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

रूसी लोक-कथा

येमेला और मछली

म० बुलातोव के शब्दों में

एक गांव में तीन भाई रहते थे: दो तो समझदार थे, पर तीसरा था बुद्धू। नाम था उसका येमेला। एक बार दोनों बड़े भाई मेले पर किसी दूर-पार के शहर को गये। जाने से पहले येमेला से बोले:

"येमेला, हमारे पीछे आलसी नहीं बने रहना, सारा वक़्त अलावघर पर सोये नहीं रहना, हमारी बीवियों का कहा मानना। इसके लिए हम तुम्हारे लिए तोहफ़े लायेंगे – नये बूट लायेंगे, पेटीदार कुर्ता लायेंगे, और लाल रंग की टोपी भी लायेंगे।"

"अच्छी बात है," येमेला ने जवाब दिया, "भाभियां जैसा कहेंगी, वैसा ही करूंगा।"

भाइयों ने विदा ली और रवाना हो गये।

कुछ देर इन्तज़ार करने के बाद उसकी भाभियां बोलीं:

"उठो येमेला, नदी पर से पानी ले आओ, घर में पानी की बूंद नहीं है।"

अलावघर पर लेटे ही लेटे येमेला बोला:

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा।"

"क्यों नहीं जाओगे तुम? हमारी मदद करने का वचन किसने दिया था?"

"अच्छा, अच्छा, जाता हूं।"

येमेला नीचे उतरा, जूते पहने, कोट पहना, पेटी में कुल्हाड़ी खोंसी, बहंगी पर बाल्टियां चढ़ायीं और निकल पड़ा।

येमेला टीले पर से उतरकर नदी की ओर गया, और नदी पर जहां बर्फ़ में सुराख़ था, बर्फ़ खोद खोदकर निकालने लगा। इतने में क्या देखता है कि एक बड़ी सी मछली पानी की सतह पर आयी है। येमेला ने झट से उसे पूंछ से पकड़कर सूराख़ में से बाहर खींच लिया।

मछली इनसानों की आवाज़ में बोली:

"अरे बुद्धू, तूने मुझे क्यों पकड़ लिया है?"

"क्यों का क्या मतलब? मैं तुझे भाभियों के पास ले जाऊंगा। वे मछली का शोरबा बनायेंगी, मुझे खिलायेंगी।"

मछली येमेला की मिन्नत-समाजत करने लगी:

"मुझे मत मार येमेला, मुझे नदी में छोड़ दे। इसके लिए मैं तुझे अमीर बना दूंगी।"

"मैं अमीर नहीं बनना चाहता," येमेला ने जवाब दिया। "तेरी दौलत के बिना भी मेरी गुज़र-बसर चलती रहेगी।"

"न सही, मैं तेरी हर इच्छा पूरी करूंगी। तू केवल इतना भर कह दिया करना: 'हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!'"

"मंजूर है!" येमेला ने कहा।

उसने मछली को वापिस सूराख़ में फेंक दिया और बुदबुदाया:

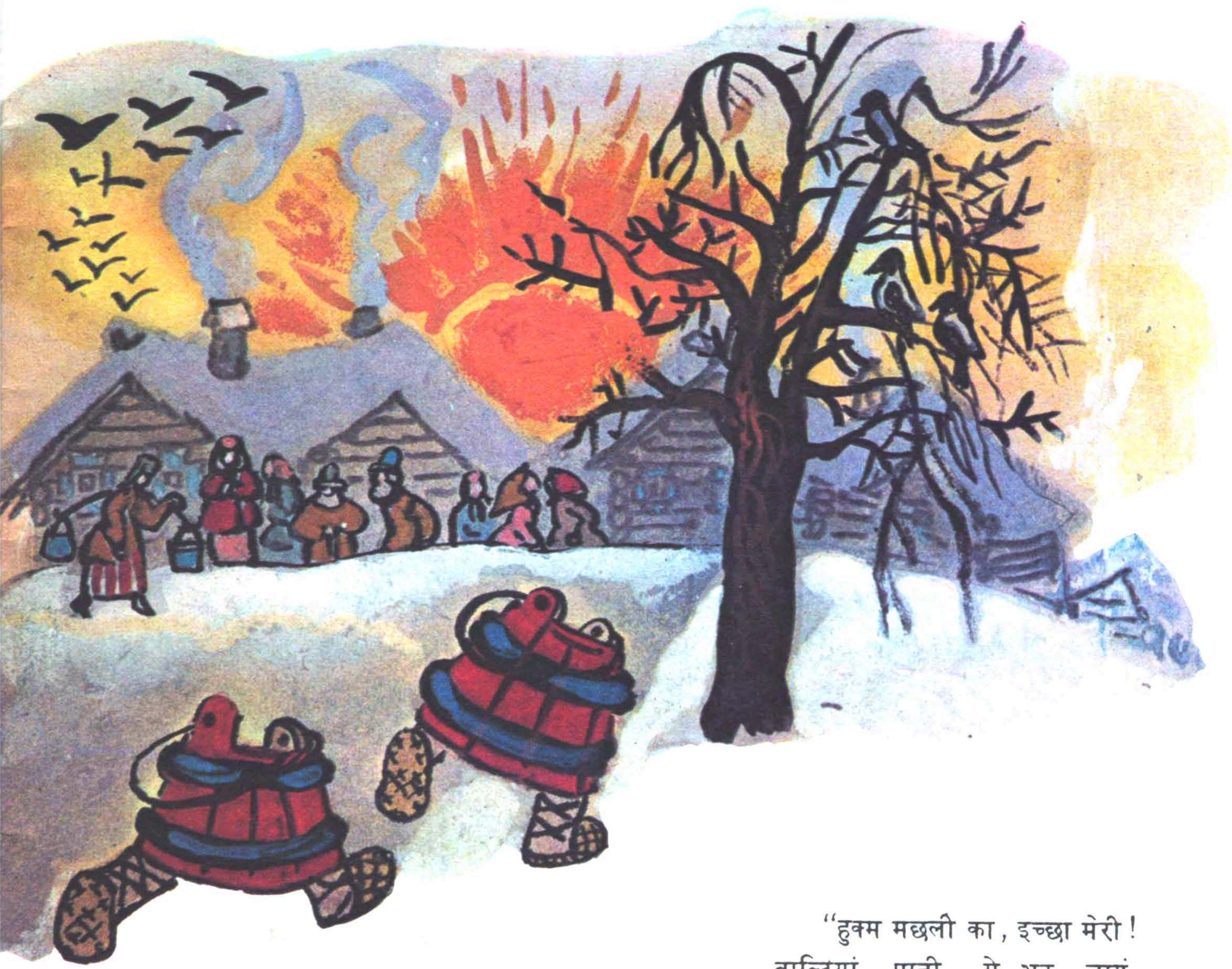

"हुक्म मछली का, इच्छा मेरी!
बाल्टियां पानी से भर जायं,
अपने आप घर चली जायं!"

कहने की देर थी कि बाल्टियां पानी से लबालब भर गयीं और अपने आप टीले पर चढ़ने लगीं। जैसे बत्तखें चलती हैं, वैसे ही बाल्टियां डगमग-डगमग जाने लगीं। पीछे पीछे येमेला जाने लगा और मन ही मन बहुत ख़ुश हुआ।

पास-पड़ोस के लोगों ने देखा, तो हैरान रह गये। घरों से, आंगनों से लोग भाग भागकर बाहर आने लगे।

"देखो, देखो," वे बोले, "येमेला कैसा कौतुक खेल रहा है! उसकी बाल्टियां अपने आप चल रही हैं, न ठोकर खाती हैं न पानी छलकता है!"

भाभियों ने येमेला को देखा, और फुसफुसाकर एक दूसरी से बोलीं:

"इसे बुद्धू कौन कहता है? यह तो बड़ा चालाक निकला! बाल्टियों को चला रहा है!"

बाल्टियां घर के बराबर पहुंच गयीं, सीढ़ियां चढ़कर बरामदे में दाख़िल हो गयीं, एक बूंद भी नहीं गिरी, और अपने आप घड़ौंची पर खड़ी हो गयीं।

येमेला ने कपड़े उतारे, जूते उतारे, अलावघर पर चढ़ गया और बोला:

"भाभियो, अलावघर तो ठण्डा पड़ा है, नीचे अलाव को गर्म नहीं किया?"

"गर्म कैसे करें, घर में ईंधन जो नहीं है। जंगल में जाओ, लकड़ी काटकर लाओ, तब हम अलाव जलायेंगी।"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा।"

"वाह जी, फिर नहीं जाना चाहता? तो तुझे तोहफ़े भी नहीं मिलेंगे, और ठण्डे अलावघर पर पड़ा ठिठुरता रहेगा!"

क्या करता? येमेला नीचे उतर आया, कपड़े पहने, आंगन में चला गया, और जंगल से लकड़ियां लाने की तैयारी करने लगा। उसने बर्फ़-गाड़ी निकाली, उसपर कुल्हाड़ी, आरी, लम्बी सी रस्सी रखी और उनके बीच ख़ुद भी चढ़कर बैठ गया।

"अरी भाभियो!" वह चिल्लाया, "फाटक को पूरा खोल दो! मैं जंगल को जा रहा हूं!"

"वाह जी," भाभियां बोलीं, "दिमाग़ तो ठिकाने है? बर्फ़-गाड़ी के साथ घोड़ा तो जोता नहीं, और जंगल जा रहे हैं। लाओ, घोड़ा जोतने में हम तेरी मदद कर देती हैं।"

और येमेला उन्हें जवाब देता है:

"घोड़े को भगाने की क्या ज़रूरत है? मुझे उसपर तरस आता है। मैं घोडे के बिना चला जाऊंगा। तुम फाटक खोलो!"

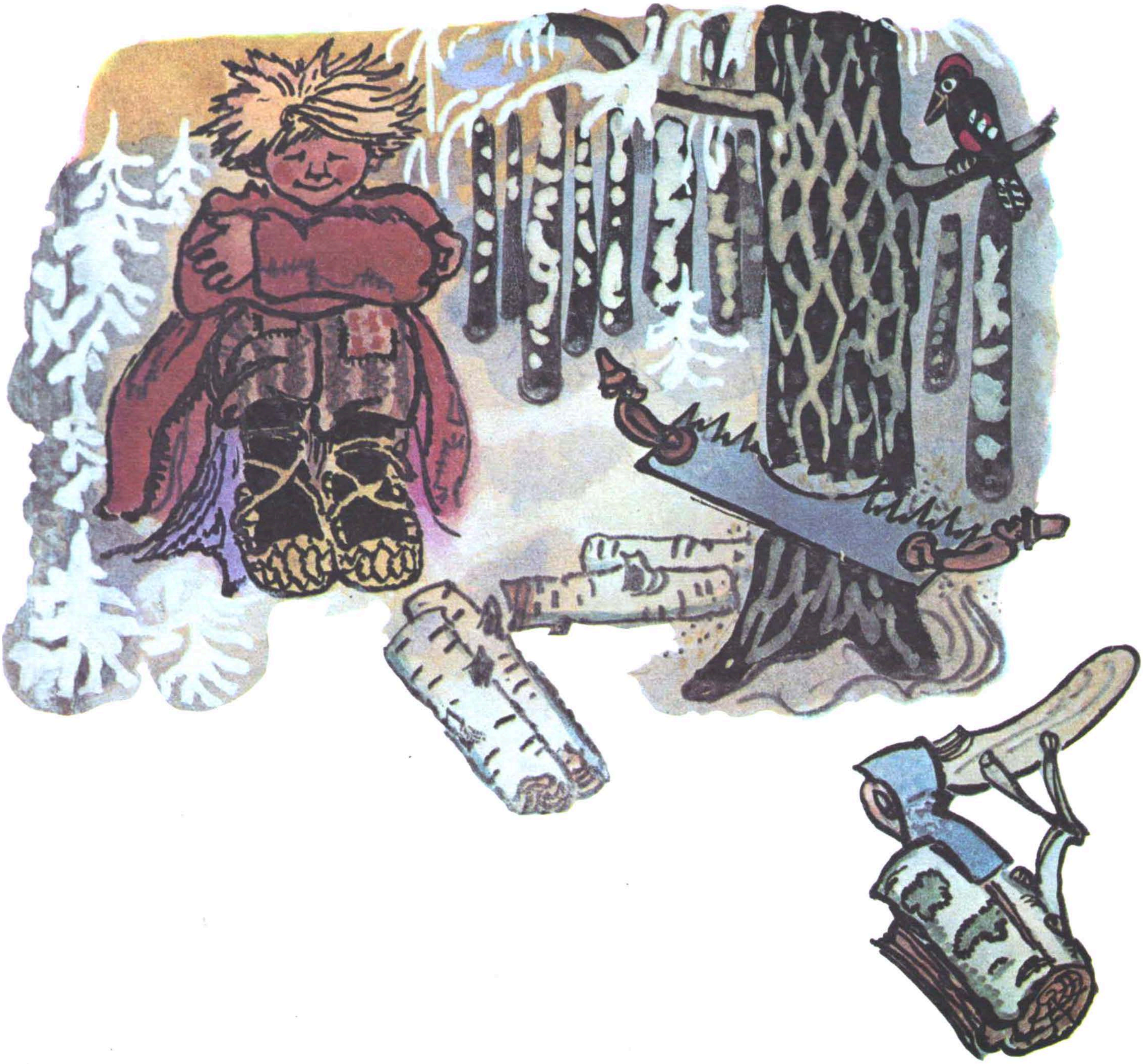

भाभियां हैरान रह गयीं, पर फाटक खोल दिया। येमेला ने झट से फुसफुसाकर कहा:

"हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! चल बर्फ़-गाड़ी, जंगल का रास्ता पकड़!"

बर्फ़-गाड़ी भागने लगी, इतनी तेज़, इतनी तेज़, मानो उसे तीन-तीन घोड़े खींच रहे हों। केवल बर्फ़-गाड़ी की पटरियों के नीचे बर्फ़ चरमरा रही थी!

बर्फ़-गाड़ी बस्ती में से निकली, गांव में से निकली, उसके बम दायें-बायें झूल रहे थे। येमेला उन्हें बांधना ही भूल गया था।

उस समय गांव में लोगों की बड़ी भीड़ जमा थी, लोग त्योहार मना रहे थे। लोग बर्फ़-गाड़ी की ओर भाग भागकर आने लगे, पीछे से और दायें-बायें से आते और लपक लपककर बर्फ़-गाड़ी के पास जाते। वे देखना चाहते थे कि घोड़े के बिना यह बर्फ़-गाड़ी कैसे चली जा रही है। लेकिन उसके झूलते हुए बम दायें-बायें लोगों को पटक रहे थे। बहुत से तो औंधे मुंह गिरे, और बर्फ़ के ढेरों पर छितर गये। तहलका मच गया, लोग येमेला के पीछे भागने लगे, वे उसे पकड़कर वापिस लाना चाहते थे, लेकिन उसे कौन पकड़ता?

बर्फ़-गाड़ी भागती हुई जंगल में पहुंची और वहां जाकर खडी हो गयी। येमेला गाड़ी पर से उतरा, और दायें-बायें देखकर बुदबुदाया :

"हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! आरी, तुम पेड़ काटो, सूखे सूखे चुनना, और तुम कुल्हाड़ी, उसके टुकड़े टुकड़े करना, और लकड़ी के टुकड़ो, तुम खुद आकर कुल्हाड़ी के नीचे लेट जाना, खुद ही बर्फ़-गाड़ी पर गट्ठर बनाना, और रस्सी से अपने को बांध लेना!"

जैसा उसने कहा, वैसा ही हुआ। आरी ने पेड़ों को काटा-गिराया, कुल्हाड़ी ने उनके टुकड़े टुकड़े किये, लकड़ी के टुकड़े खुद भागते हुए बर्फ़-गाड़ी की ओर गये, खुद ही उसपर चढ़ गये, गट्ठर बनकर खड़े हो गये, और रस्सी से अपने को मज़बूती से बांध लिया। अब तो गांव को वापिस लौटा जा सकता था!

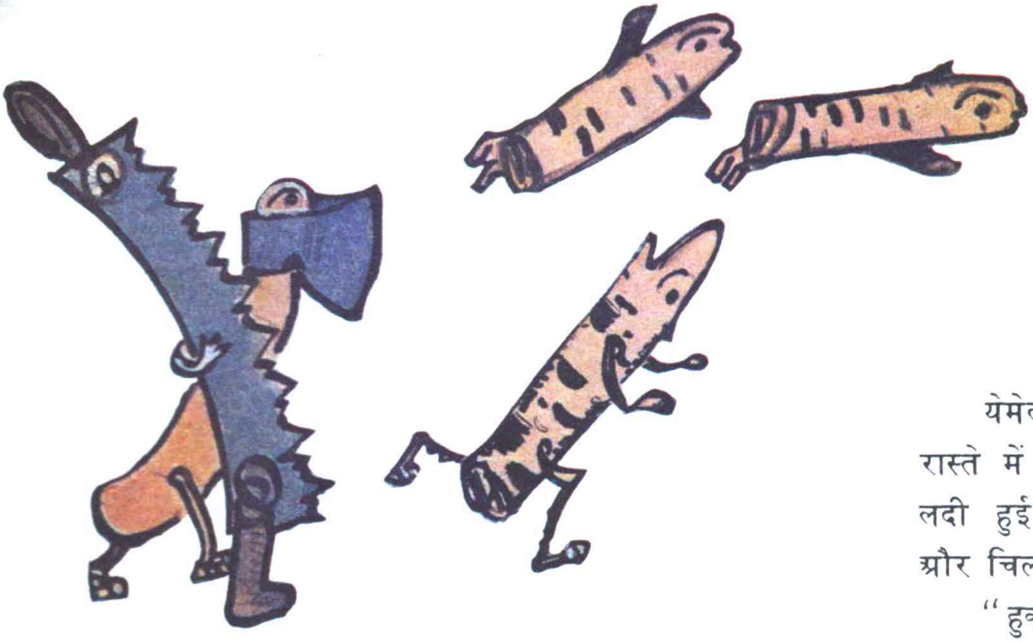

येमेला ने बम बांध दिये ताकि रास्ते में लोगों को चोट नहीं लगे, लदी हुई बर्फ़-गाड़ी पर बैठ गया, ग्रौर चिल्लाकर बोला:

"हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! चल री गाड़ी, घर की ग्रोर!"

बर्फ़-गाड़ी भाग चली, केवल पीछे बर्फ़ उड़ रही थी!

गांव में लोग पहले से येमेला का इन्तज़ार कर रहे थे। किसी ने हाथ में दोफाला उठा रखा था, तो किसी ने भट्ठी का लम्बा चिमटा, कुछेक ने लाठियां उठा रखी थीं, ग्रौर कुछेक ने रस्सियां। वे येमेला को पकड़कर सज़ा देना चाहते थे: क्यों उसने सब को डराया ग्रौर ग्रौंधा गिराया?

ज्यों ही उन्होंने येमेला को देखा, वे उसपर फंदा डालने, उसे पकड़ने के लिए लपके ग्रौर चिल्लाने लगे:

"रोको! पकड़ लो! जाने न पाये!"

पर भला कौन उसे रोकता, कौन उसे थाम सकता था? बर्फ़-गाड़ी सनसनाती हुई निकल गयी ग्रौर बर्फ़ के नीचे उसके निशान तक ढक गये।

बर्फ़-गाड़ी सीधी फाटक पर ग्राकर खड़ी हो गयी। गाड़ी में से लकड़ी के टुकड़े ग्रपने ग्राप कूद कूदकर निकलने लगे: कुछ तो ग्रांगन में गये ग्रौर सीधे ईंधन की कोठरी में

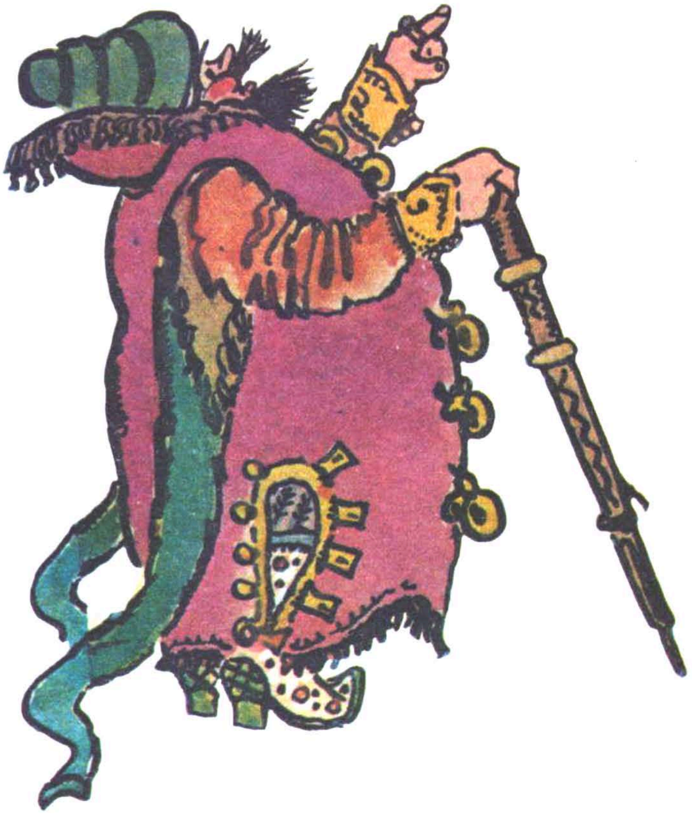

पहुंचकर गट्ठर बनकर खड़े हो गये, कुछेक बरामदे के रास्ते घर के अन्दर जा पहुंचे और सीधे अलाव में घुस गये। इस तरह एक के बाद एक लकड़ी का टुकड़ा लुढ़कता आया। आरी को साथ लिये कुल्हाड़ी भी अन्दर आयी, दोनों अपने आप बेंच के नीचे पसर गयीं।

भाभियां डर गयीं, नहीं जानती थीं कि क्या सोचें, क्या करें। डर के मारे वे कांपने लगीं, और छिपने लगीं, एक मेज़ के नीचे जा छिपी, दूसरी सोनेवाले तख़्ते पर चढ़ गयी।

"हम तेरे भाइयों से तेरी शिकायत करेंगी!" वे चिल्लायीं।

येमेला हंसने लगा।

"तुम कैसी डरपोक हो! आओ और जल्दी से मुझे खाना दो। जंगल में मैं ठिठुरता रहा हूं।"

येमेला शोरबा खाकर फिर अलावघर पर लेट गया। इस बीच लोग भागते हुए राजा के पास गये और शिकायत की: गांव में येमेला नाम का एक बुद्धू रहता है, वह घोड़े के बिना बर्फ़-गाड़ी की सवारी करता है, सभी को डराता है, औंधे मुंह गिराता है, लोग बचने के लिए बर्फ़ के ढेरों की ओर भागते हैं।

राजा को बड़ा कुतूहल हुआ – कौन है यह येमेला? राजा ने अपने वज़ीर को हुक्म दिया कि जाओ और येमेला को मेरे पास ले आओ।

अपने कुछेक नौकरों को साथ लेकर वज़ीर गांव में पहुंचा। येमेला के घर का पता लगाया। और घर के अन्दर क़दम रखते ही लगा धमकाने और चिल्लाने:

"कहां है यह बुद्धू येमेला? उसे हाज़िर करो!"

भाभियां तो डर के मारे अलावघर के पीछे छिप गयीं, वे तो अपना चेहरा दिखाने से भी डरती थीं, उनके मुंह से तो बोल भी नहीं फूट पाता था। पर येमेला को कोई डर-ख़ौफ़ नहीं था।

"यह रहा," वह बोला, "अलावघर पर बैठा हूं, और तुम्हें देख रहा हूं। कहो क्या चाहिए?"

"अरे बुद्धू, कपड़े पहनो, जूते पहनो और चलो मेरे साथ राजा के पास!"

"मैं कहीं नहीं जाऊंगा।"

"तेरी यह हिम्मत! आगे से जवाब देता है!"

वज़ीर लपककर येमेला के पास गया और उसके मुंह पर कसकर उलटा चांटा रसीद किया।

"इसे ज़बरदस्ती पकड़कर ले चलो!" वह चिल्लाया।

यह येमेला को अच्छा नहीं लगा। वह धीरे से फुसफुसाया:

"हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! उठ मेरी लाठी, इन बिन बुलाये मेहमानों की खातिरदारी कर दे! और झाड़ू, इन्हें थोड़ा झाड़-पोंछ दे!"

लाठी उठ खड़ी हुई, और झाड़ू उछलकर सामने आ गया, और दोनों राजा के वज़ीर की ख़ातिरदारी करने लगे। वज़ीर ने धमकाना छोड़ दिया, वह कभी भागता, कभी उछलता, बार बार झुकता और दया की भीख मांगता।

अपने नौकरों के साथ वज़ीर घर से निकला और सिर पर पैर रखकर भागा। लाठी और झाड़ू ने उन्हें छोड़ा नहीं, उनपर दया नहीं की। वज़ीर की पीठ और कन्धों की अच्छी मरम्मत करते हुए उसे राजा के महल तक छोड़ आये।

वज़ीर ने राजा के सामने दण्डवत् किया और बोला:

"महाराज, ज़ोर-ज़बरदस्ती से उसे नहीं लाया जा सकता। उसे चालाकी से ही लाया जा सकता है..."

अब राजा ने येमेला के पास अपना दूसरा मंसबदार भेजा जो हैसियत में छोटा लेकिन अक़्ल में बड़ा था। मंसबदार ने शहद के केक लिये, सूखा मेवा लिया, मिठाई ली, और येमेला से मिलने चल पड़ा।

वह गांव में पहुंचा, येमेला की भाभियों को खोज निकाला और उनसे कुरेद कुरेदकर पूछने लगा:

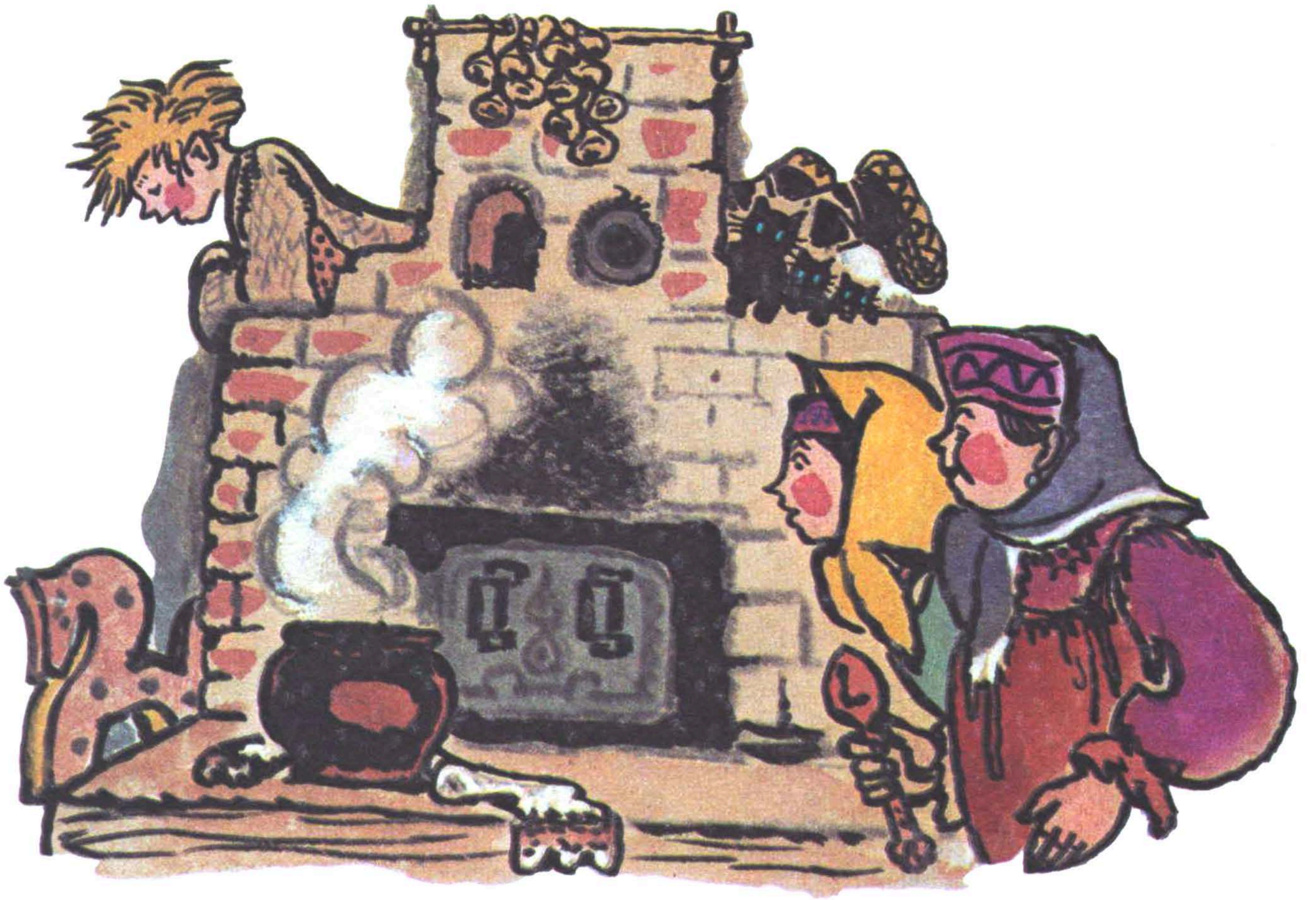

"तुम्हारे येमेला को क्या भाता है ग्रौर क्या नहीं भाता?"

भाभियां बोलीं:

"उसके साथ कोई रुखाई से बोले तो उसे नहीं भाता, प्यार-मुहब्बत से बोले तो उसे भाता है।"

मंसबदार ने घर में प्रवेश किया, ग्रलावघर के पास गया ग्रौर झुककर बोला:

"नमस्कार, येमेला इवानिच, मैं ग्रापके लिए यह केक लाया हूं, सूखा मेवा लाया हूं ग्रौर मिठाई लाया हूं। इन्हें खाइये ग्रौर मेरे साथ राजा के पास चलने की कृपा कीजिये। महाराज ग्रापको देखने के लिए बड़े उत्सुक हैं।"

"मैं ग्रलावघर पर से नहीं उतरूंगा," येमेला ने जवाब दिया।

"चलिये येमेला इवान्चि! ग्रगर ग्राप नहीं चलेंगे तो महाराज मेरा सिर काट देंगे।"

येमेला को मंसबदार पर रहम ग्राया।

"जैसी तुम्हारी इच्छा," वह बोला, "चलता हूं। केवल तुम ग्रागे ग्रागे चलो, सड़क को साफ़ करो, ग्रौर मैं तुम्हारे पीछे पीछे ग्राऊंगा।"

मंसबदार ने ग्राहिस्ता से भाभियों से पूछा:

"यह बुद्धू धोखा तो नहीं देगा?"

"धोखा नहीं देगा," भाभियों ने जवाब दिया। "यह ऐसा आदमी नहीं है। यह बात का धनी है, जो कहता है वही करता है।"

मंसबदार चला गया और येमेला अलावघर पर पसर गया और बोला:

"इस गरम गरम अलावघर को मैं नहीं छोड़ूंगा। बाहर बर्फ़ का अन्धड़ चल रहा है, पाला है, और मेरा गाढ़े का कोट, जगह जगह से फटा हुआ है, जगह जगह उसपर पेवन्द लगे हैं। हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! सुन रे अलावघर, चल राजा के पास!"

कहने की देर थी कि अलावघर हिलने लगा, चरमराने लगा, और मकान में से अलग होकर चलने लगा। अलावघर खेतों को लांघता, चरागाहों को लांघता, बस्तियों और गांवों को लांघता मंसबदार के पास जा पहुंचा और उससे भी आगे निकल गया।

वह सीधा चलता गया, न दायें को घूमा न बायें को। चिमनी में से धुआं निकलता रहा, और उससे सटकर येमेला बैठा गाने गाता रहा। अलावघर राजधानी में जा पहुंचा, और सीधा राजा के महल में जा खड़ा हुआ। सारी राजधानी में तहलका मच गया। लोग उंगलियां उठा उठाकर उसे एक दूसरे को दिखाने लगे, शोर मच गया, कुत्ते भूंकने लगे, घोड़े हिनहिनाने लगे, मुर्ग़ बांग देने लगे...

नौकर भागते हुए राजा के पास गये।

"जल्दी बाहर चलिये, महाराज! बुद्धू येमेला अलावघर पर सवार होकर आपके पास आया है!"

राजकुमारी को साथ लिये राजा छज्जे पर निकल आया, और उसके साथ सामन्त और वज़ीर भी छज्जे पर आ गये। राजा ने येमेला से पूछा:

"घोड़ों के बिना बर्फ़-गाड़ी चलाने का तुझे क्या अधिकार है? मेरी प्रजा को डराने और उसे औंधा गिराने का तुझे क्या अधिकार है?"

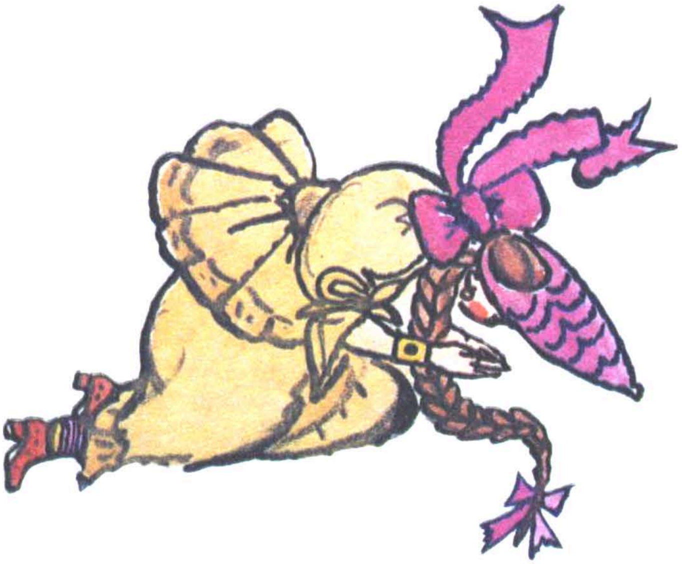

जवाब में येमेला बोला :

"मेरा क्या दोष? वे आगे से हटते नहीं थे, खुद बर्फ़-गाड़ी के नीचे आते थे, अगर तू भी आगे आ जाता तो तेरा भी कचूमर निकल जाता।"

राजा बौखला उठा, हुक्म दिया कि येमेला को खींचकर अलावघर पर से उतार लिया जाय, इसे कोड़ों से पीटा जाय और जेल में बन्द कर दिया जाय। येमेला ने देखा कि यहां इन्तज़ार करने में भलाई नहीं है, और धीरे से फुसफुसाया :

"हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! चल अलावघर वापिस! और मैं चाहता हूं कि राजकुमारी मुझसे प्रेम करने लगे, और मेरे साथ शादी करने के लिए मिन्नतें करे।"

अलावघर घूम गया और वहां से जाने लगा। राजा चिल्लाया :

"पकड़ लो इसे, अलावघर पर से घसीटकर उतार लो, रस्सियों से बांध दो इसे!"

पर कौन करता? येमेला ने आने पर न तो नमस्कार ही किया था और न जाने पर इजाज़त ही मांगी थी।

अलावघर लौट आया, चरमराया, और कोने में जाकर ऐसे खड़ा हो गया मानो सदियों से वहीं खड़ा हो, मानो वहां से कभी हिला तक न हो।

और राजा के महल में रोना-धोना चल रहा था। राजकुमारी राजा का नाक में दम किये हुए थी, उसे चैन नहीं लेने दे रही थी।

"येमेला को क्यों डांटा-धमकाया? उसे क्यों डराया? मैं उसके बिना एक पल भी ज़िन्दा नहीं रह सकती। मैं उससे ब्याह करना चाहती हूं।"

राजा बहुत परेशान हुआ, बहुत झल्लाया, हाथ-पांव पटके, पर कुछ नहीं कर पाया। राजकुमारी दिन-रात ज़ार-ज़ार रोती, उसके आंसू नहीं सूख पा रहे थे, न कुछ खाती, न पीती, न सोती। अधमरी हुई जा रही थी। कोई चारा नहीं था। राजा ने हुक्म दिया कि येमेला को ले आओ।

"पर अलावघर पर उसे नहीं लाना," उसने कहा। "अलावघर से उसे बड़ा प्यार है। उसे बर्फ़-गाड़ी पर लाना। यहां हम उससे निबट लेंगे!"

राजा का दूसरा चालाक मंसबदार गांव में पहुंचा, उसने धोखे से, अपनी कपटपूर्ण बातों से येमेला को फांस लिया। उसे बेहोशी की दवाई पिलाकर बेहोश कर दिया, और ख़ूब ज़ोर से रस्सियों से बांधकर बर्फ़-गाड़ी में डाला, और जितनी तेज़ी से हो सकता था, बर्फ़-गाड़ी को भगाते हुए राजा के पास ले आया।

मंसबदार येमेला को राजा के पास ले गया, राजा ने पहले से एक बहुत बड़ा सा पीपा तैयार कर रखा था। नौकरों ने येमेला को पकड़ा और पीपे मे बन्द कर दिया। राजकुमारी ने यह सब देखा, वह भागती हुई आयी और दोनों हाथों से पीपे को पकड़ लिया। उसे वह छुड़ाये न छोड़ती थी।

"जहां येमेला जायेगा, वहीं मैं भी जाऊंगी!" वह चिल्लायी।

यह सुनकर राजा ग़ुस्से से पागल हो गया। उसने हुक्म दिया कि राजकुमारी को भी पीपे में डाल दो।

"अगर वह इस बुद्धू से इतना प्रेम करती है, तो यह भी उसी के साथ जहन्नुम में जाय!"

नौकर राजा का हुक्म बजा लाये। उन्होंने पीपे को लोहे के घेरों से मज़बूती से बांध दिया, ऊपर कोलतार लगायी और ले जाकर समुद्र में फेंक आये। पीपा लहरों पर तैरने लगा।

पीपे के अन्दर राजकुमारी ने पहले तो येमेला की रस्सियां खोल दीं, फिर उसे जगाने लगी:

"तू सो रहा है, येमेला! उठ जाग! हम पीपे में पड़े हैं, हमें वे लोग सागर में फेंक गये हैं। न कुछ खाने को है, न पीने को, हम भूखों मर जायेंगे!"

येमेला बोला:

"मुझे नींद आयी है, मैं सोना चाहता हूं।"

"मैं भी सोना चाहती हूं, पर यह सोने का वक़्त नहीं है। पीपे को किनारे ले चल। तू बहुत समझदार है, सब कुछ कर सकता है!"

"जैसे कहती हो," येमेला ने कहा, "हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! चलो पीपे हरे चरागाह की ओर, सुनहरे बालू की ओर, और वहां पहुंचकर खुल जाओ!"

कहने की देर थी कि पीपा एक द्वीप से जा लगा और पहुंचते ही खुल गया। येमेला और राजकुमारी बाहिर निकले। क्या देखते हैं कि हरा चरागाह है, और सुनहरा बालू बिछा हुआ है।

राजकुमारी ने चारों ओर देखा और बोली:

"येमेला, प्यारे, हम यहां रहेंगे कैसे? यहां तो न कोई गांव है न नगर। अगर कहीं छोटा सा झोंपड़ा भी होता..."

"होगा, पर झोंपड़ा नहीं," येमेला ने जवाब दिया, "हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! एक महल बन जाय जो राजा के महल से भी सुन्दर हो!"

कहने की देर थी कि महल तैयार हो गया, मानो ज़मीन में से निकल आया हो। सात खम्भों पर खड़ा था, ख़ूब सजा-धजा, छतें चांदी की, गुम्बद सोने के, चारों तरफ़ बरामदे थे, ऊपर नीचे, दूर दूर तक फैले हुए। महल के चारों ओर बाग़ था और तालाब थे, और तरह तरह की बारहदरियां थीं। बाग़ में बुलबुलें गा रही थीं, तालाबों में बत्तखें और हंस तैर रहे थे।

वे महल में दाखिल हुए। अन्दर से महल और भी सुन्दर निकला: छत के साथ साथ सूरज की लाल टिकिया सरकती हुई चलती जाती, और जब सूरज डूब जाता तो चमकता चांद और अनगिनत झिलमिलाते तारे सामने आ जाते...

वे द्वीप पर महल में रहने लगे। उनके पास सब कुछ था, पर फिर भी उनका मन नहीं लगता था, क्योंकि वहां पर और लोग नहीं थे।

"काश कि मैं अपने सगे-सम्बन्धियों को एक नज़र देख पाती," राजकुमारी ने कहा।

"अच्छी बात है!" येमेला ने कहा। "हुक्म मछली का, इच्छा मेरी! समुद्र के आर-पार लोहे का पुल बन जाय! और पुल पर से मेरे भाई अपनी पत्नियों को साथ लेकर चले आयं।"

बस, फिर क्या था, समुद्र के आर-पार पुल बन गया। पुल के डंडहरे सोने के थे, ख़म्भों पर हीरे-जवाहिरात जड़े हुए थे, जो झिलमिल-झिलमिल ख़ूब चमकते थे! और पुल पर एक घोड़ा-गाड़ी प्रगट हुई। उसपर येमेला के भाई और उनकी बीवियां चली आ रही थीं। सभी ने नये कपड़े, नये सराफ़ान पहन रखे थे – फूलों की तरह चमक रहे थे। उन्होंने येमेला को गले लगा लिया और बार बार उसे चूमने लगे।

"बुद्धू, तुझे खोजते खोजते हमारी टांगें टूट गयी हैं, जंगल क्या और दलदल क्या, हमने सभी छान मारे। और तू यहां बैठा है!..."

सहसा उन्होंने सुना – तोपें दाग़ी जा रही हैं। द्वीप के साथ एक जहाज़ आ लगा। जहाज़ पर अपने दरबारियों और नौकरों-चाकरों के साथ राजा सवार था। येमेला ने पूछा:

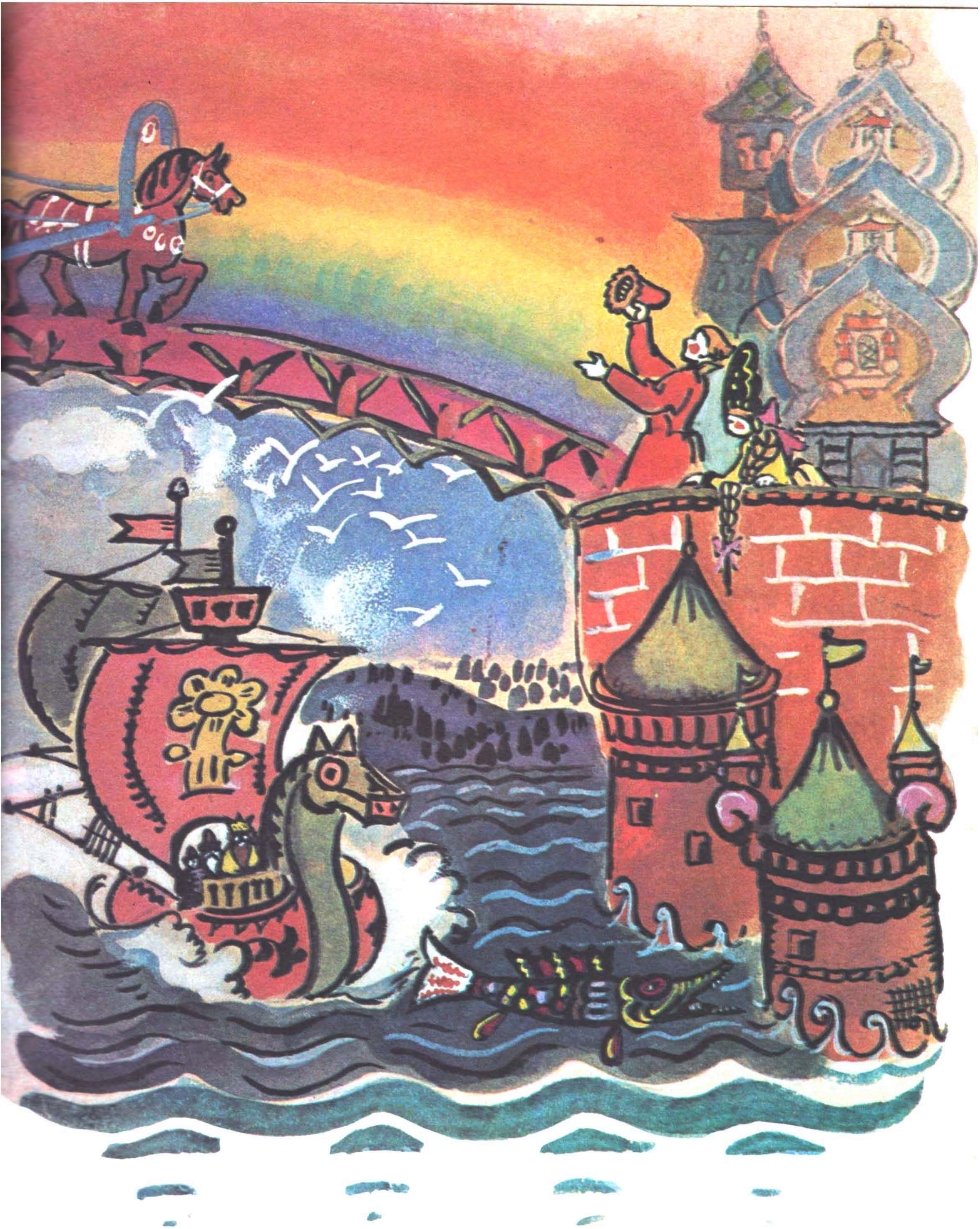

"जहाज़ के मुसाफ़िरो, कहां जा रहे हो?"

"आठों पहर समुद्र में भटक रहे हैं, पीपा ढूंढ़ रहे हैं।"

"पीपा किस लिये?"

"किस लिये, क्या?" राजा ने जवाब दिया। "पीपे में मेरी बेटी है, और बुद्धू येमेला है। मेरी अक़्ल पर पत्थर पड़ गये, मैं उन्हें मार डालना चाहता था..."

येमेला बोला:

"मेरी ओर ध्यान से तो देखो, क्या मैं ही तो वह आदमी नहीं हूं जो अलावघर पर बैठकर तुम्हारे पास आया था?"

राजा ने देखा, डर के मारे थर-थर कांपने लगा, और येमेला के पांव पकड़ लिये।

"मुझे माफ़ कर दो, येमेला, मुझे मौत की सज़ा नहीं देना..."

"अच्छी बात है," येमेला ने कहा, "ऐसा ही होगा, अब की बार मैंने तुझे माफ़ किया।"

इसपर राजकुमारी बाहर निकल आयी।

"हम पर कृपा कीजिये," वह बोली, "महल के अन्दर चलिये।"

सब लोग बलूत की लकड़ी के बने सुन्दर मेज़ों के पास बैठे। मेज़ों पर बेल-बूटों वाले सुन्दर मेज़पोश बिछे थे। उनकी ख़ुशी का वारापार न था। सभी आनन्द से खाने-पीने और गीत गाने लगे।

मैं भी वहीं पर था
ख़ूब खाया, ख़ूब पिया,
मूछों से सब टपकता रहा
पर मुंह के अन्दर नहीं पाया!

अनुवादक– भीष्म साहनी

चित्रकार : त० मान्रिना

ПО ЩУЧЬЕМУ ВЕЛЕНИЮ
Русская народная сказка

на языке хинди

BY THE WILL OF THE PIKE
Russian folk-tale

In Hindi

ISBN 5-05-002414-5